वो उससे मिला था

अनघ शर्मा

वो उससे मिला था

"वो उससे मिला था।", लड़कियों के झुंड में से एक आवाज़ गूंजी।

"कब,कहाँ?", तूने कहाँ देखा ? किसी ने पूछा।

"कल वहीं बस अड्डे पे देखा था दोनों को, वह आठ चालीस की बस से चली गयी और वो …"

"और वो क्या?"

"और वो साढ़े नौ की बस से चला गया। "

"और तुम क्या करतीं रहीं वहाँ साढ़े नौ तक ?"

"मैं तो कल कॉलेज आयी ही नहीं थी, मैं तो कल बाज़ार गयी थी। "

"बाज़ार गयी थी या नम्रता का पीछा कर रही थी। "

"धत, उसने कहा।"

और फिर हँसते-हँसते सब चले गये।

……

सब चले गये। वो सब चले गये। एक-एक करके सब चले गये। ताहिरा चली गयी, निम्मी चली गयी, वसंतसेना भी चली गयी। तीन पन्नों में सिमटी वसंतसेना भी चली गयी,वो तो गणिका थी उसे तो जाना ही था।

"पर मैं, मैं कौन हूँ ?"

ये मैं,मैं,मैं की उत्सुकता, उत्कंठा का कहीं पार नहीं। कैसा समंदर है जहाँ से कोई निकास नहीं, कोई पुल नहीं पार करके जाने को। पुल तो था पर टूट गया। पानी के एक ही थक्के से पुल टूट गया और बहा ले गया अपने साथ तीन साल। जो कहीं और होते तो पता नहीं कैसे गुज़रते ?

पर जैसे गुज़रे वो भी तो बुरे नहीं गये। साफ़,मीठे से किसी फल की तरह। अपने मरा के साथ कैसा वक़्त गुज़ारा मैंने कितना अच्छा,सुखद पर अब ??

मरा,मरा,कैसा मीठा नाम है। पर नाम तो कुछ और ही था। क्या था ?याद नहीं अब। कभी कॉलेज के किसी ड्रामे में उसने मंगत राम नाम का पार्ट प्ले किया था, धीरे-धीरे वो पूरे कॉलेज में पहले मंगत राम और बाद में मरा के नाम से मशहूर हो गया। उसका मरा, सब यही कहा करते थे।

"मेरा था ,वो मेरा था, सबको यही लगता था। "

"पर वो मेरा हो न सका। "

सब बदल गया। वो बदल गया जिसे वक़्त कहा जाता है। मैं,वो जहान सब बदल गया।

.....

नम्रता नीचे आ जल्दी , निम्मी ने आवाज़ लगाई, देख ताहिरा आई है, तेरे लिए मेहंदी लाई है। जल्दी आ कर लगवा ले, गर्मी में रंग अच्छा चढ़ेगा।